International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

हरियाणा में मराठा घटनाक्रम (1770–1785)

*यजबीर सिंह, **डॉ॰ जितेन्द्र शर्मा

*पी–एच॰डी॰ शोधार्थी (इतिहास)जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (म॰प्र॰)

**प्राचार्य, पं॰ श्यामाचरण उपाध्याय महाविद्यालय,जौरा खुर्द, मुरैना (म॰प्र॰)

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10664045

शोध सारांश :

हरियाणा मराठों के राज्य का एक प्रमुख केन्द्र रहा था। 1753 में दिल्ली में प्रवेश करने के बाद मराठों को हरियाणा के कुछ क्षेत्र प्राप्त हुए। लेकिन मराठे इससे सन्तुष्ट नहीं हुऐ तथा उन्होंने हरियाणा के स्थानीय शासकों को हराकर 1754–55 तक हरियाणा के अनेक स्थानों को जीत लिया। 9 जनवरी 1758 मल्हार राव के शिविर की महिलाऐं सोमावती अमावस्या के अवसर पर कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थ में स्नान के लिए गई थी। वहाँ पर अहमद शाह अब्दाली के द्वारा नियुक्त सिंध के गवर्नर अब्दुल समद खान ने उन पर आक्रमण कर दिया। इसमें मल्हार राव ने अफगानों को पराजित किया तथा उनके घोड़े छींन लिये। यह मराठों तथा अहमद शाह अब्दाली के संघर्ष का मुख्य कारण बना। जिसके परिणामस्वरुप 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई हुई तथा मराठों की हार हुई। इसके बाद महादजी सिन्धिया के द्वारा दिल्ली तथा हरियाणा के क्षेत्र में मराठा शक्ति की पुर्नस्थापना की।

सार :

हरियाणा मध्यकाल में दिल्ली सूबे का एक भाग था। हरियाणा के पानीपत, झज्जर, रेवाड़ी, पटौदी, हिसार आदि प्रमुख स्थान मुगल साम्राज्य के प्रमुख केन्द्र थे। 1526 ई॰ में जब बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोधी को हराकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली तो उसने हरियाणा में कुछ प्रशासनिक व राजनीतिक परिवर्तन किये। बाबर के उत्तराधिकारियों के समय में हरियाणा में सामान्यतः शान्ति रही और प्रशासनिक एवं राजनीतिक सुधारों को और भी सुदृढ़ किया गया। मुगल साम्राज्य के अन्तिम शाक्तिशाली बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य कमजोर होने लगा जिसके कारण हरियाणा में प्रशासनिक अव्यवस्था का दौर आरम्भ हुआ तथा विदेशी शक्तियों का हरियाणा में प्रवेश होने लगा। धीरे–धीरे मुगल साम्राज्य का पतन होने लगा और इसका लाभ उठाकर दक्षिण भारत की एक प्रमुख शक्ति मराठो ने दिल्ली की और प्रस्थान किया।

मराठों के हरियाणा में आने के समय मुगलों का शासन कमजोर हो गया था। इस समय बिलोच, पठान और अहिरों के क्षेत्र को छोड़कर शेष हरियाणा से मुगल अधिपत्य समाप्त हो चुका था। 1750 ई॰ के दशक में हरियाणा में अव्यवस्था का दौर आरम्भ हो चुका था जिसका लाभ उठाकर जाट राजा सूरजमल ने फरीदाबाद के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। पश्चिमी हरियाणा में जयपुर के शासक माधव सिंह ने आक्रमण करने आरम्भ कर दिये और महेन्द्रगढ तथा नारनौल पर अधिकार कर लिया। लेकिन यह अव्यवस्था ज्यादा समय तक नहीं रह पाई। दक्षिण से आये मराठों ने पेशवाओं के नेतृत्व में हरियाणा पर अपना प्रभुत्व बढाना आरम्भ कर दिया। लेकिन सही माईनों में दिल्ली में मराठों का प्रवेश 1753 ई॰ में ही सम्भव हो सका। क्योंकि इस समय मराठा सरदार मलहार राव होल्कर के पुत्र खाण्डेराव ने दिल्ली में प्रवेश किया था। इतिहासकार **हरिराम गुप्ता** ने इस विषय पर लिखा हैं– 'मराठे हरियाणा पर अधिकार नहीं करना चाहते थे अपितु वे केवल धन–दौलत प्राप्त करने के इच्छुक थे।'

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

25 अक्तुबर 1754 मुगल शासक आलमगीर द्वितीय ने मराठों को कुरुक्षेत्र का धार्मिक क्षेत्र प्रदान किया।[1] लेकिन मराठों की महत्वकांक्षा और बढ गई तथा उन्होंने हरियाणा के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। उन्होंने रोहतक तथा हिसार बलोचों से छीन लिये तथा अफगान सरदार मराठों के आने से भाग खड़े हुए। इसमें सबसे आश्चर्य की बात यह थी कि जाटों तथा राजपूतों ने बिना लड़ाई के ही मराठों की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार 1754–55 तक मराठों का काफी बड़ें क्षेत्र पर अधिकार हो गया था।[2]

इसी दौरान दिल्ली दरबार में षड्यन्त्रों का दौर आरम्भ हो चुका था। दिल्ली में मुगल बादशाह आलमगीर द्वितीय तथा वजीर सफदरजंग के मध्य झगड़ा चला हुआ था, जिसके कारण सम्राट ने मराठों से सहायता मांगी तथा बदले में एक करोड़ रुपया व अवध एवं इलाहाबाद के प्रदेश देने की पेशकश की। जिसे मराठा सरदार रघुनाथ राव ने स्वीकार कर लिया तथा अपनी सेना भेजने के लिए सहमत हो गया। 1754 ई॰ में मराठा सेना ने दिल्ली में प्रवेश किया। होल्कर के नेतृत्व में मराठा सेना ने शाही शिविर को लुटा और सिकन्दराबाद से शाही महिलाओं का अपहरण कर लिया। 1754 ई॰ में ही रघुनाथ राव दिल्ली पहुँचा तथा वहाँ गाजीऊद्दीन के छोटे पुत्र इमादुल्मुल्क को वजीर बनाने के लिए सम्राट पर दबाव ड़ाला।[3]

इसी समय उत्तर भारत में अहमद शाह अब्दाली ने आक्रमण किया। 1757 ई॰ में उसने दिल्ली साम्राज्य में कदम रखा। 9 जनवरी 1758 मल्हार राव के शिविर की महिलाऐं सोमावती अमावस्या के अवसर पर कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थ में स्नान के लिए गई थी। वहाँ पर अहमद शाह अब्दाली के द्वारा नियुक्त सिंध के गवर्नर अब्दुल समद खान ने उन पर आक्रमण कर दिया। इसमें मल्हार राव ने अफगानों को पराजित किया तथा उनके घोड़े छींन लिये। वहाँ से वापिस लौटते हुए मल्हार राव ने तरावड़ी, करनाल तथा कुंजपूरा को लुटा।[4] हरियाणा से लौटने के बाद मल्हार राव ने रघुनाथ राव से मुलाकात की तथा पंजाब को जीतने की योजना बनाने लगा। 1758 ई॰ में मराठो पंजाब की और बढ़े।

अदिना बेग खान के नेतृत्व में मराठा तथा सिखों ने सरहिन्द का घेरा ढ़ाल लिया, जिसके कारण अहमद शाह अब्दाली का गवर्नर अब्दुल समद खान डर कर भाग गया। मराठा सेना तथा सिखों ने मिलकर सरहिन्द को खुब लुटा। लुट के माल को लेकर मराठों तथा सिखों में झगड़ा आरम्भ हो गया। अदिना बेग के कटिन प्रयासों से इस झगड़ें को टाला जा सका। इस विजय से मराठों के प्रभाव में वृद्धि हुई। इसी प्रभाव के कारण दिल्ली साम्राज्य के वजीर ने मराठों के समर्थन से मुगल बादशाह अहमदशाह को गद्दी से हटाकर आलमगीर द्वितीय को गद्दी पर बैठा दिया। जिसके कारण मुगल सम्राट भी मराठों के प्रभाव में आ गया।

पंजाब पर अधिकार करने के बाद मराठों ने दत्ता जी सिंधिया को अटक का शासक नियुक्त किया जिसने कि अफगानों को सिंधु नदी पार करने से रोका। मुल्तान में बप्पु जी त्रियम्बक को प्रशासक नियुक्त किया गया। जिसने कि ड़ेरागाजीखां तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों पर आक्रमण करके मराठा राज्य की स्थापना की तथा अदिनाबेग को लाहौर का गवर्नर बनाकर दिल्ली वापिस लौट आये।[5]

पेशवा बालाजी बाजीराव के पंजाब तथा दिल्ली की राजनीति में हस्तक्षेप करने के कारण अफगानिस्तान का शासक अहमदशाह अब्दाली भारत पर आक्रमण करने के लिए तत्पर हो गया। मराठों ने लाहौर पर अधिकार के बाद अहमदशाह अब्दाली के गवर्नर तैमूरशाह को भगाकर वहाँ पर अधिकार कर लिया। जिसके कारण अहमदशाह अब्दाली भड़क उठा तथा भारत पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा।

इसके साथ ही मुजफ्फरनगर में रोहिल्ला सरदार नजीब खां ने मराठों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया। उसने सुक्रताल के स्थान पर कोटे तथा खाईयाँ बनवाई तथा उसमें तोपे लगा दी और अपने निशानेबाज नियुक्त कर दिये। जब मराठों ने देखा कि उन्हें सीधे आक्रमण में हराया नहीं जा सकता तो उन्होंने मुजफ्फरनगर को चारों और से घेर लिया। जिससे नजीब खां को लगा कि वह अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है। रोहिल्या सैनिक मराठों पर बन्दुको से टुट पड़े। इस युद्ध में दत्ता जी की हार हुई।[6]

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

सुक्रताल में दत्ता जी की स्थिति का समाचार प्राप्त होते ही अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण कर दिया तथा लाहौर पर अधिकार कर लिया। दिसम्बर के पहले सप्ताह में अहमदशाह अब्दाली दत्ता जी के नजदीक पहुँच गया था। दत्ता जी ने सेना को दो भागों में बांट दिया तथा थानेश्वर में मराठा तथा अफगान सैनिकों के बीच युद्ध हुआ।

जनवरी 1761 के आरम्भ में अहमदशाह अब्दाली ने नजीब खां को यमुना नदी पार करने के उद्देश्य से भेजा। यहाँ पर मराठा सरदार सम्भाजी सिंधिया उस घाट की रक्षा कर रहा था। उसने यह समाचार दत्ता जी सिंधिया तक पहुँचा दिया। दत्ता जी युद्ध क्षेत्र में आ गए और मराठों तथा अफगान सैनिको में भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में गोली लगने कारण दत्ता जी की मृत्यु हो गई। दत्ता जी की मृत्यु ही पानीपत के तीसरे युद्ध का तात्कालिन कारण बनी। यह खबर शीघ्र ही पुना में पेशवा को पहुँचा दी गई। पेशवा ने अपनी सेना को संगठित किया और पानीपत में युद्ध के लिए आ पहुँचे।[7]

1760 में रोहिल्यों द्वारा हार के कारण दिल्ली मराठों के हाथ से निकल गई थी। पेशवा की सेना ने 1 अगस्त को मराठों का मित्र जाट राजा सूरजमल उनका साथ छोड़कर चला गया। अहमदशाह अब्दाली तथा मराठों का सामना पानीपत के मैदान में हुआ। 14 जनवरी 1761 ई॰ को मराठों तथा अफगान सेना में युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में मराठा सरदार गोविन्द पन्त तथा बलवन्त राव मारा गया। युद्ध सूबाह 9 बजे आरम्भ हुआ, युद्ध के आरम्भ में मराठे अच्छी स्थिति में थे परन्तु वे दोपहर तक लड़ते–लड़ते थक गए। मराठा सेना के दाहिने ओर होल्कर, जनकोजी तथा अंताजी लड़ रहे थे। कुछ समय के बाद जनकोजी विचलित हुए तथा पीछे हट गए। लगभग 4 बजे तक युद्ध समाप्त हो गया।[8]

एक अनुमान के अनुसार मराठा सेना में 55000 घुडसवार, 15000 पैदल सैनिक व अलग–अलग प्रकार की 100 तोपे थी। दूसरी ओर अफगान सेना में 41800 घुडसवार, 38000 पैदल और 70 तथा 80 के बीच तोपें थी। आधुनिक इतिहासकार **हरिराम गुप्ता** के अनुसार इस युद्ध में संख्या में 60000 मुस्लमान तथा 45000 मराठे थे व युद्ध कोशल में अब्दाली सदाशिवराव भाऊ से श्रेष्ट था।[9]

इसके पश्चात् अब्दाली ने 29 जनवरी 1761 को दिल्ली में प्रवेश किया तथा उसने शाहआलम द्वितीय को भारत का सम्राट व नजीब खां को मीर बक्शी घोषित किया। युद्ध के पश्चात् पेशवा को युद्ध के परिणाम के विषय में एक साहुकार से जानकारी प्राप्त हुई। साहुकार ने पेशवा को पत्र के माध्यम से लिखा कि "दो मोती गल गये, 90 मोहरें खो गई और सोने व तांबे की तो कोई गणना ही नहीं की जा सकती।"[10]

पानीपत के युद्ध में पराजय के पश्चात् मराठों की स्थिति काफी कमजोर हो गई थी। रोहिल्ला सरदार नजीमुद्दौला की मृत्यु के बाद दिल्ली की राजनीति में फिर से परिवर्तन आया तथा मराठों ने एक बार फिर से अपनी सैनिक शक्ति को संगठित किया। उस समय दिल्ली का सम्राट शाहआलम द्वितीय इलाहाबाद में अंग्रेजों की शरण में था। वह दिल्ली की गद्दी चाहता था। ऐसी स्थिति में मराठों ने शाहआलम का साथ देने का फैसला किया तथा 6 जनवरी 1772 को उसे दिल्ली का सम्राट बना दिया। इससे एक बार फिर मराठों का दिल्ली की राजनीति में प्रभाव बढ गया। अहमद शाह अब्दाली के वापिस जाने के बाद हरियाणा के क्षेत्र मराठों तथा अफगानों दोनों से स्वतन्त्र हो गए थे। जाट राजा सूरजमल की मृत्यु के बाद जाट राज्य में उत्तराधिकार के लिए युद्ध आरम्भ हो गया था। जिसमें जवाहर सिंह और नाहर सिंह एक दूसरे से लड़ रहे थे।

मराठों ने सबसे पहले रोहेलखण्ड के क्षेत्र पर अधिकार किया। इसके पश्चात् पत्थरगढ़ की तरफ बढे और उसको लुट लिया। अब मराठों ने हरियाणा के सोनीपत, अनुपशहर तथा पानीपत की मांग की। मुगल सम्राट ने महादजी सिंधिया को अनुपशहर और करनाल दे दिया।[11]

दिल्ली पर अपना प्रभुत्व रखने वाले मिर्जा नज्फ खां का 20 अप्रैल 1781 को देहान्त हो गया। उसकी मृत्यु के बाद दिल्ली दरबार एक बार फिर से राजनीति का अखाड़ा बन गया। ऐसी स्थिति में मुगल बादशाह शाहआलम ने मराठा सरदार महादजी सिंधिया से सहायता की पेशकश की। महादजी सिंधिया तुरन्त ही उनकी सहायता करने के लिए तैयार हो गए तथा एक विशाल

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

सेना लेकर दिल्ली पहुँचे। किसी भी विरोधी की उनका प्रतिरोध करने की हिम्मत नहीं हुई। मुगल शासक शाहआलम ने महादजी सिंधिया को शाही सेना का प्रधान सेनापति तथा राज्य का संचालक नियुक्त किया। इसके बदले में सिंधिया ने 65000 रुपए प्रतिमाह बादशाह को देना स्वीकार किया।[12]

महादजी सिंधिया दो वर्ष तक दिल्ली में रहे, उसके बाद रोहिल्ला सरदार राजस्थान के राजपूत शासक व कुछ मुगल सरदारों ने मिलकर महादजी के खिलाफ षड्यन्त्र रचा तथा उसे दिल्ली से बाहर निकाल दिया। जैसे ही सिंधिया दिल्ली से बाहर गए, उसी समय रोहिल्ला सरदार गुलाम कादिर ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया तथा शाहआलम व उसके परिवार के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया।

महादजी सिंधिया ने दक्षिण में जाकर एक बार फिर से अपनी सेना को संगठित किया तथा 1784 ई॰ में पुनः दिल्ली पर आक्रमण किया। इस युद्ध में मराठों ने रोहिल्लों को हराकर रोहिल्ला सरदार गुलाम कादिर को बन्दी बना लिया और उससे मुगल बादशाह शाहआलम पर किये गये अत्याचारों का बदला लिया। उससे प्रसन्न होकर शाहआलम ने सिंधिया को अपना प्रिय पुत्र कहा तथा हरियाणा का अधिकांश प्रदेश उसे दे दिया। महादजी सिंधिया ने देखा कि दिल्ली के समीप होने के बावजूद हरियाणा के लगभग सारे प्रदेश सम्राट के हाथों से निकल चुके थे, जैसे – रेवाड़ी, गुड़गांव, झज्जर तथा रोहतक पर नजफ कुली खां ने अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था। वह गोकुल गढ को अपनी राजधानी बनाकर वहाँ से अपना प्रशासनिक कार्य कर रहा था। वह राजपूतों के साथ मिलकर मराठों के विरुद्ध संगठन बना रहा था। उत्तर–पश्चिमी हरियाणा में फतेहबाद, सिरसा में भाटी लोगों का स्वतन्त्र राज्य बन गया था। महादजी सिंधिया ने एक–एक करके इन सभी क्षेत्रों पर अपना अधिकार कर लिया।[13] 1785 ई॰ के अन्त तक मराठा सरदार अम्बाजी इंगले ने अम्बाला, करनाल, जीन्द आदि सिख रियासतों पर आक्रमण किये, परन्तु उन्हें कोई खास सफलता प्राप्त नहीं हुई। जिससे महादजी सिंधिया ने सिखों से सन्धि कर ली। सिख सरदार बघेल सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि सिख और मराठों को मैत्रिपूर्ण सम्बंध बनाये रखने चाहिए।[14]

उपरोक्त विवरण के आधार पर हमें पता चलता है कि हरियाणा में 1770 से 1785 ई॰ तक का काल मराठों व स्थानीय शक्तियों के राजनीतिक संघर्ष का काल एवं उथल–पुथल का काल था। इस काल में कई स्थानीय शक्तियों जैसे जाट, सिख एवं रुहेले काफी सक्रिय रहे थे। इसी काल के दौरान हरियाणा में मराठा सरदार महादजी सिंधिया एक प्रमुख शक्ति के रुप में उभरा था। उसने कई स्थानीय शक्तियों को पराजित कर दिल्ली व हरियाणा में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था।

सन्दर्भ सूची :

1. गुप्ता, हरिराम, मराठा एवं पानीपत, चण्डीगढ, 1961, पृ॰ सं॰ 321–22
2. वही! पृ॰ सं॰ 323
3. सरदेशाई, गोविन्द सखाराम, मराठों का नवीन इतिहास खण्ड–2, आगरा, 1976, पृ॰ सं॰ 420
4. चीमा, जी॰स॰, द फॉरगोटन मुगल्स : ए हिस्ट्र ऑफ द लेटर एम्पायर ऑफ द हाउस ऑफ बाबर 1707–1857, मनोहर पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रब्युटर, 2003, पृ॰ सं॰ 298
5. सरदेशाई, गोविन्द सखाराम, पूर्व उद्धृत, पृ॰सं॰ 510
6. सरकार, जे॰ एन॰, फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, खण्ड–3, ज्ञान पब्लिसिंग हाउस, 2022, पृ॰सं॰ 158
7. सरदेशाई, गोविन्द सखाराम, पूर्व उद्धृत, पृ॰सं॰ 429–30
8. औझा, श्री कृष्ण, मुगल कालिन भारत (औरंगजेब से पानीपत के तृतीय युद्ध तक), दिल्ली, पृ॰सं॰ 482–83
9. गुप्ता, हरिराम, पूर्व उद्धृत, पृ॰सं॰ 218

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

10. वही! पृ॰सं॰ 280–83
11. सरकार, जे॰ एन॰, पूर्व उद्धृत, पृ॰सं॰ 358–59
12. वही! पृ॰सं॰ 529
13. वही! पृ॰सं॰ 307–10
14. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, हिसार, पृ॰सं॰ 27